Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, NOV-DEC, 2018, VOL- 6/48

साठोत्तरी कहानीकार चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में मूल्य विघटन

(श्रीमती) मधु सारस्वत, Ph. D.

(हिन्दी विभाग), श्रीमती रामदुलारी कॉलेज, ओल, मथुरा,

(सम्बद्ध : डॉ० भीमराव अ० विश्वविद्यालय, आगरा)

Abstract

साठोत्तरी कहानीकार चित्रा मुद्गल की विद्रोही विचार धारा के प्रभाव से उनका साहित्य भी अछूता नहीं रह सका। उनके साहित्यें नारी का पारिवारिक जीवन, विवाह, नौकरी, दहेज, बेकारी, अकेलापन, ऊब, संत्रास आदि को कहानियों में व्यापकता के साथ चित्रित किया गया हैं। इसके अलावा प्रगतिशील नारी, नौकरीपेशा नारी, आधुनिक महानगरीय नारियाँ भी इनकी कहानियों का विषय रही हैं। आज नारी में सामाजिक चेतना जागृत हुई हैं, वह अपने साथ होनेवाले अत्याचारों का विरोध करती हैं। नारी मुक्ति में ज्यादातर लेखिकाओं ने स्त्री—पुरूष समानता की बात व्यक्त की हैं। समकालीन महिला कहानीकारों में चित्रा मुद्गल का स्थान महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही स्त्री—पुरूष सम्बन्धों को भी चित्रा जी ने अपनी कहानियों का विषय बनाया हैं। विवाह पूर्व तथा विवाहेत्तर संबंध, पति—पत्नी का आपसी रिश्ता, प्रेमी—प्रेमिका संबंध आदि संबंधो को उन्होंने कामुकता पूर्वक चित्रित किया हैं। 'चेहरे' कहानी में भिखारिन के साथ सिपाहियों के अत्याचार को दिखाया गया हैं जिसम नैतिक पतन स्पष्ट परिलक्षित होता है । 'फातिमाबाई कोठे पर ही नहीं रहती' कहानी में वैश्या व्यवसाय के साथ जुड़ी हुई औरतो की स्थिति और उनकी समस्याओं पर उनका दृष्टिकोंण सामाजिक भावनाओं को ठेस पहुँचाता है। साथ ही अपने आपको आधुनिक माननेवाले दम्पति और उनकी यौन स्वच्छंदता का चित्रण 'वाइफ स्वैपी' कहानी में किया गया हैं। 'दुलहिन' कहानी में पुरानी पीढ़ी की मानसिकता को एंव नई पीढी के सांस्कारिक पतन को उजागर करता हैं।

***अध्ययन के उद्देश्य** : चित्रा मुद्गल की विद्रोही विचार धारा का उनके साहित्य पर प्रभाव एंव कथा साहित्य में मूल्य विघटन का विश्लेषणत्मक अध्ययन करना।*

***पारिभाषिक शब्दावली (Key-words)** : साठोत्तरी कहानीकार , मूल्य विघटन, नैतिक पतन, सामाजिक चेतना, नारी मुक्ति।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय : चित्रा मुद्गल का जन्म १० दिसम्बर १९४४ को चेन्नई में हुआ था। उनके दादा डा० बजरंग सिंह, उ०प्र० के उन्नाव जिले के निहाली खेड़ा गाँव के जमींदार थे। चित्रा मुद्गल के पिता का नाम ठा० प्रताप सिंह और माता विमला देवी थी। चित्रा मुद्गल जी ने कहानियों में सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला हैं, जीवन का यथार्थ उनकी कहानियों में झलकता हैं। नारी चेतना का मुद्दा कई वर्षो से हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण भाग रहा हैं। चित्रा मुद्गल ने नारी के विविध रूप अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं। पढ़ी—लिखी एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण नारी आत्मनिर्भर हो रही हैं। चित्रा जी की 'लाक्षागृह', 'ताशमहल', 'अभी भी', 'प्रमोशन', केंचुल', 'नतीजा' आदि कहानियों में हमे आत्मनिर्भर नारी का चित्रण देखने को मिलता हैं। पारिवारिक विघटन एवं यांत्रिकता के कारण मानवी आज अकेलेपन की पीड़ा व्यक्त कर रहा हैं, उसका वास्तविक चित्रण हमें चित्रा जी की 'अग्निरेखा' की मनु, 'मोरचे पर' की रिन्नी 'अपनी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वापसी' कहानी की शकुन में दिखाई देता हैं। इसके अलावा चित्रा जी ने 'ब्लेड', 'लकड़बग्धा', 'गेंद', 'एंटीक पीस', 'जंगल', 'पेश', 'जरिया' कहानियों में अलग अलग विषयों को उठाकर कथावस्तु का निर्माण किया हैं।

विश्लेषण: स्त्री—पुरूष सम्बन्धों को चित्रा जी ने अपनी कहानियों का मूल विषय बनाया हैं। विवाह पूर्व तथा विवाहेत्तर संबंध, पति—पत्नी का आपसी रिश्ता, प्रेमी—प्रेमिका संबंध आदि संबंधो को उन्होंने कामुकता पूर्वक चित्रित किया हैं। 'चेहरे' कहानी में भिखारिन के साथ सिपाहियों के अत्याचार को दिखाया गया हैं जिसम नैतिक पतन स्पष्ट परिलक्षित होता है । 'फातिमाबाई कोठे पर ही नहीं रहती' कहानी में वैश्या व्यवसाय के साथ जुड़ी हुई औरतों की स्थिति और उनकी समस्याओं पर उनका दृष्टिकोंण सामाजिक भावनाओं को ठेस पहुॅचाता है। साथ ही अपने आपको आधुनिक माननेवाले दम्पति और उनकी यौन स्वच्छंदता का चित्रण 'वाइफ स्वैपी' कहानी में किया गया हैं। 'दुलहिन' कहानी में पुरानी पीढ़ी की मानसिकता को एंव नई पीढी के सांस्कारिक पतन को उजागर करता हैं। 'बावजूद इसके' कहानी में परिवार और दफ्तर दोनों जगहों पर पुरूष द्वारा नारी किस हद तक प्रताड़ित हैं, इसका चित्रण किया गया हैं।

समाज के बदलाव के साथ आधुनिकता बोध को भी चित्रा जी ने अपनी कहानियों का विषय बनाया हैं। 'अढाई गज की ओढ़नी' कहानी में टी०वी०;टेलिविजनद्ध संस्कृति के आने के कारण बच्चों में आ रहे बदलाव और उनमें बढ़ते यौन आकर्षण को दिखाया गया हैं। 'एक काली एक सफेद' कहानी में नायिका के अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह को दिखाया गया हैं। चित्रा जी ने कामकाजी नारी की समस्याओं को भी बखूबी उठाया हैं। 'सुख' कहानी की सुमंगला', 'शून्य' कहानी की सरला, 'प्रमोशन' कहानी की ललिता, 'बावजूद इसके' कहानी की प्रीति इन सारी कामकाजी महिलाओं की घर—बाहर की समस्याओं का चित्रण कहानियों में किया गया हैं। इसके अतिरिक्त 'दरमियान' कहानी में चित्रा जी ने स्त्री की माहवरी की समस्या कों उठाकर एक अलग विषय का चयन कहानी में किया हैं। 'प्रेतयोनि' कहानी में बलात्कारियों के विरूद्ध आवाज युवति के साहस और संघर्ष की गाथा चित्रा जी ने मार्मिक शब्दों में व्यक्त की हैं। प्रभाव स्वरूप उनके साहत्यि में एक भोंडापन परिलक्षित होता है एंव उनके साहित्य में वैयक्तिकभवना का समावेश सा प्रतीत होता है। चित्रा मुद्गल के कहानी साहित्य में विविध आयाम एवं कथावस्तु के अलग—अलग रूपों के दर्शन होते हैं। बदलते परंपरागत ढाँचे में नारी ने अपने जीवनानुभव से नई सीख ली और यह हर स्थिति से जुझते हुए आगे बढ़ी हैं। चाहे वह सामान्य गृहिणी हो या दफ्तर में कार्य करनेवाली, घर से दफ्तर के बीच वह संघर्षशील चेतना का आवरण धारण कर नई सभ्यता के लिए अपने नये अस्तित्व का परियच देती हुई दिखाई दे रही हैं। क्योंकि हार माना और पीछे मुड़कर देखना उसने अब छोड़ दिया हैं। चित्रा मुद्गल की नारी हर समय तटस्थ रहकर

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परम्परागत ढाँचे को तोड़कर नया आवरण धारण कर अपने व्यक्तित्व को नया आयाम देने में सफल रही हैं। अपने आत्मनिर्णय से वह व्यथित नहीं हैं क्योंकि जीवन और जगत के अनुभवों से उसने बहुत कुछ सीखा हैं और त्यागा भी हैं। समकालीन महिला कहानीकारों में ज्यादातर लेखिकाओं ने भारतीय नारी जीवन की त्रासदी को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया हैं। इसके साथ ही पश्चिम के नारी मुक्ति आंदोलन तथा नारीवादी विचारधारा से प्रभाव ग्रहण किया हैं। हिन्दी लेखिकाओ का एक वर्ग ऐसा है जो नारीवाद का सीमित अर्थ लेकर नारी स्वातंत्र्य को आर्थिक आत्मनिर्भरता और यौन स्वच्छंदता से जोड़ता हैं, तो दूसरी ओर कुछ ऐसी भी लेखिकाएँ है, जो साहित्यकार के उत्तरदायित्व को समझते हुए सही अर्थ में स्त्री—पुरूष समानता की पक्षधर बनकर साहित्य सृजन करती हैं। ऐसे साहित्यकारों में चित्रा मुद्गल का स्थान उल्लेखनीय हैं। चित्रा जी सामाजिक हित की पक्षधर हैं। नारी—मुक्ति के लिए वह पुरूष को विपक्ष बनाना चाहती हैं। पुरूष विरोधी मानसिकता पारिवारिक विघटन के लिए उत्तरदाई कारण हो सकता है। नारी मुक्ति या स्वतंत्रता का सही मतलब हैं कि नारी स्वंय देह की परिधि से ऊपर उठकर अपने अस्तित्व पर विश्वास करें। इसके लिए हमारी परम्परा और संस्कृति को नकार देना आवश्यक नहीं है। चित्रा मुद्गल जी की यही सोच उन्हें अन्य समकालीन महिला कहानीकारों से अलग विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं। वे एक बहुचर्चित एवं सम्माननीय कहानीकार हैं। 'एंटिक पीस' कहानी 'आवाँ' अपन्यास का एक अंश हैं। इसमें नायिका नमिता की माँ हंमेशा अपने बहन के बच्चों की तारीफ करते हुए थकती नहीं हैं। इतना ही नहीं वह अपने पति की लाइ हुई साड़ी भी जितनी प्रसन्नता से नहीं पहनती उतनी अपनी बहन कुन्ती की उतरन पहनते उसे आनंद मिलता हैं। नैतिकता मानवजीवन में आचरण को बताने वाली समाज की स्वीकृत नियमावली होती है।

स्त्री—पुरूष संबंधो का खुला चित्रण 'बाइफ स्वैपी, कहानी में प्रस्तुत हुआ हैं। इसमें महीने की आखिरी शनिवार की शाम जश्न चलता हैं, अंत में एक बड़े जग में बियर के साथ सभी लोग अपनी गाड़ी की चाबी भी डाल देते हैं। जिस गाड़ी की चाबी जिसके हाथ में आएगी गाड़ी के मालिक की पत्नी रातभर उस पुरूष के साथ रहेगी। स्त्री—पुरूष संबंधो का यह नया प्रकार मुक्त काम प्रसंग नई नैतिकता का परिणाम हैं।

धन आज मानवी की जिंदगी में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बन गया है, धन के लिए मानव अपने पराए का भेद भी भूल गया हैं। 'लकड़बग्धा' कहानी में भी पर्छाहवाली विधवा हैं जो अपनी बेटी पुनिया के लिए ही जी रही हैं। वह चाहती हैं कि उसकी बेटी पुनिया पढ़े —लिखे। वह अपनी बात अपने जेठ लंबरदार को भी बताती हैं। लेकिन लंबरदार उसकी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देता । पर्छाहवाली अपने जेठ को कहती हैं कि मुझे मेरा हिस्सा दे दो, बँटवारा कर दो

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

'उसके जेठ को पता हैं कि अलगा—अलगी की बात पुरे गाँव में आग की तरह फैल जाएगी और पुरे अठारह बीधे की जमीन से हाथ धोना पड़ेगा।

सुबह आकर लंबरदार को सती ने खबर दी कि अम्मा के साथ गई पर्छाहवाली को खेत में से लकड़बग्धा उठाकर ले गया हैं। संपत्ति की लालसा ने मानव को आज इतना अंधा बना दिया हैं कि उसे अपने — पराए का भेद भी नहीं दिखता। अपने ही छोटे भाई की पत्नी को लंबनदार संपत्ति के लिए मरवा देता हैं। 'बलि' कथा में भी संपत्ति के बँटवारे को लेकर सगे फुफेरे भाई की बलि ली जाती है। ठाकुर बालभद्र सिंह अपनी बेटी के वैवाहिक सुख और जमींदार घराने में विवाह की इच्छा से ज्यातिषी के कहने पर तेरह साल के करूमा की मेहतर की पूजा में 'बलि' चढा देते हैं। बदलें में उसके पिताजी को साढ़े तीन एकर की जगह मिलती हैं, जिस पर साग सब्जी उगाइ जाती हैं, साड़े तीन सौ रुपये हर महीने मिलते हैं। एक ईन्सान की जिंदगी की कीमत हर महीने साड़े तीन सौ रुपये यहाँ प्रस्तुत हैं। अपने स्वयं के स्वार्थ के लिए लोग दूसरों की जिंदगी को दाव पर लगाते है, मानवीयता का यह रिश्ता वहाँ नहींके बराबर होता हैं।

'दशरथ का वनवास' कहानी में रमानाथ कहानी का नायक हैं। वह बचपन से अपने पिता के आतंक का शिकार होता हैं। बढती उम्र के साथ यह नफरत इतनी तीव्रता के साथ बढ़ती हैं कि जब पिता के मृत्यु का समय नजदीक आता हैं तब भी वह उन्हें मिलने नही जाता । नफरत का मूल कारण था बचपन में पिताजी की साईकिल चलाने के लिए उसकी जानवरो जैसी पीटाई हुई थी। इसी वजह से रमानाथ के दिल में पिता के प्रति डर और नफरत का भाव उत्पन्न होता हैं। वह अपने बच्चों को भी दादा से मिलने नहीं देता । एक दिन पार्सल में एक साईकिल आती हैं उस पर जो चिट्टी लिखी थी उस पर पिताजी के आत्मीयता भरे शब्द पढ़कर रमानाथ को पश्चाताप होता है पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। महेश दर्पण लिखते है कि — ''हृदय को स्पर्श करनेवाली यह कहानी कोरी भावुकता को प्रश्रय नहीं देती .... इसके पार्श्व में यथार्थ की ऐसी पारदर्शी जमीन भी हैं जो पीढ़ियो के अंतराल को बहुत सूक्ष्म नजर से देखती हैं। '' यहाँ पर बचे के मन में अपने माता—पिता के प्रति प्रतिशोध की भावना को दर्शाया गया हैं। पाप और पुण्य के रूढिगत संदर्भो को लेकर अगर नैतिकता को सोचे तो सार्त्र और कीर्केगार्द ने व्यक्ति की आचार संहिता में पुण्य के साथ—साथ पाप को भी महत्वपूर्ण माना हैं। 'जिनावर' कहानी में मनुष्य निर्धनता के कारण अपराध करने के लिए विवश बन जाता हैं उसका चित्रण असलम मियाँ के द्वारा किया गया हैं। असलम मियाँ के लिए उनकी घोड़ी सरवरी, सबकुछ भी बीबी, बेटी बहन, प्रेमिका सबकुछ। उसके ऊपर ही असलम मियाँ का पूरा परिवार चलता हैं। सरवरी को भयंकर बीमारी हो जाती हैं

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपलब्धि: नि:संदेह कहा जा सकता हैं कि चित्रा मुद्गल जी ने अपने कहानी साहित्य में अनछुए प्रसंगो को, चरित्रों को, परिस्थितियों को छुआ हैं। इसलिए उनके साहित्य में मानवीय आस्था का एहसास दिखाई देता हैं। वह स्वयं एक नारी होकर भी किसी नारी की वकालत नहीं करती बल्कि एक तटस्थ दृष्टा की तरह नारी के स्वभाव के साथ अभावों को उसकी इच्छाओं को, आकाक्षाओ को अभिव्यक्ति दी हैं। आदि—अनादि की भूमिका मैं उन्होंने अपने बारे में लिखते हुए कहा है कि ''मैं अपनी चेतना की अभिव्यक्ति के लिए लिखती हूँ। स्वयं के होने को महसूस करने और उस सामाजिक उपस्थिति के दायित्वों और सरोकारो को पूरा करने के लिए लिखती हूँ। प्रत्यक्ष जीवनानुभवों की भित्ति पर ही समस्याओं को चित्रों मुद्गल जी ने रचनात्मक आयाम प्रदान किये हैं। प्रत्यक्ष जीवनानुभवों की भित्ति पर निर्मित चित्रा जी का रचना जगत क्रांति चेष्टा के भीतर लोक—मंगल का पथ प्रशस्त करता हैं। लेखिका सामाजिक पुननिर्माण और संरचना के लिए साहित्य को एक कारगल विकल्प के रुप में मान्यता प्रदान करती हैं।परिवर्तन आने लगा है। स्त्री की नैतिक दासता स्वयं को घोषित करने के पीछे लगी हैं, नैतिकता संबंधी मानदण्ड भी परिवर्तित होते हैं। नारी जीवन के नए प्रतिमान निर्माण हुए हैं, जीने का तरीका बदला व्यवहार, चुनाव में अधिकारो का उपयोग होने लगा हैं। स्त्री और पुरूष दोनों की वृत्ति विलासपूर्ण, भोगवादी जीवन जीने की और बढ़ रही हैं। 'नाम' लघुकथा में रतिया डोमिन ने अपने बेटे का नाम देवेन्द्र प्रताप सिंह लिखा इसलिए सरपच ठाकुर रिछपाल सिंह अपने साथियों समेत उसे डराने वहाँ वहुँच जाते है और कहते हैं।डोमिन होने के बाबजूद उसने अपने बेटे का ठाकुरो जैसे नाम क्यों रखा है एक डोमिन ठाकुर की माँ कैसे हो सकती हैं। इस पर रतिया कहती हैं— ''मार डारौ खिलादो, डरकर हम साँच के पर नहीं कतर सकते, मालिक। ठाकुर के बेटे का नाम ठाकुरों जैसे न धरे तो क्या डोम ' चमारो वाला घर दे।'' यहाँ पर रतिया सबके सामने ये जाहिर कर देती हैं कि उसका बेटा ठाकुरों की एय्याशी का परिणाम हैं। यहाँ पर ठाकुरों की झूठी नैतिकता का पर्दाफाश किया हैं। 'सुख' कहानी में चित्रा जी ने प्रोफेसर सुमंगल की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी हैं। विधवा सुमंगला को घर में काम करनेवाली नौकरानी की तलाश थी, जो बहुत मुश्किल के बाद मिली थी। वह अपनी नौकरानी फूली का ध्यान अपने बच्चे की तरह रखती है,लेकिन फूली का मन नहीं लगता था और एक दिन वह काम छोड़कर चली जाती हैं। सुमंगला को पड़ोस की नौकरानी बताती हैं कि फूली ने उसे बताया था कि उस घर में काम में मेरा जी नहीं लगता क्योंकि — ''घर में कोई मर्द नहीं। इस कहानी में लेखिका ने बदलते परिवेश के साथ निम्नवर्गियों की बदलती नैतिकता को भी रेखांकित किया हैं। लेखिका ने इसमें एक मनोवैज्ञानिक सत्य को उदघाटित किया है कि स्त्री और पुरूष दोनों एक दूसरे के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। नैतिकता के कारण मानव समाज में अच्छा व्यवहार करता हैं डॉ. अमरज्योति के अनुसार— ''नई नैतिक विचार प्रणाली ने स्त्री—पुरूष संबंधो

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को बहुत अधिक प्रभावित किया हैं। विवाह एवं दाम्पत्य संबंधो को भी इस नवीन नैतिक चेतना से गहरा आघात पहुँचा हैं।''

संन्दर्भ

मिश्र श्याम सुन्दर : २००२ ; अस्तित्ववाद और साहित्य , न्यू भारत पब्लि० , दिल्ली

भारद्वाज कृष्णकान्त : २००९ ; आधुनिक हिन्दी कहानी , अनन्त प्रकाशन , नई दिल्ली

पाटिल कल्पना : २०१२ ; चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर

बाविष्कर राजेन्द्र : २०१३ ; चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी, रोली पब्लि०, जयपुर

पाण्डे मृणाल : २०१४ ; परिधि पर स्त्री , राधाकृष्ण प्रकाशन , नई दिल्ली

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies